अहिंसा यात्रा प्रेस विज्ञप्ति

केरल की जनता को आध्यात्मिकता से भावित करने निकल पड़े महातपस्वी महाश्रमण

-केरल की धरती पर गूंजने लगे अहिंसा यात्रा के संदेश

-राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 544 पर लगभग बारह किलोमीटर का हुआ विहार

-पालाक्कड के चन्द्रानगर स्थित श्री पार्वती मण्डपम में पधारे शांतिदूत

-शक्ति का सदुपयोग करने की आचार्यश्री ने दी पावन प्रेरणा

21.02.2019 चन्द्रानगर, पालाक्कड (केरल): जनकल्याणकारी अहिंसा यात्रा के साथ भारत के सोलहवें राज्य के रूप में केरल की धरती का स्पर्श करने वाले जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अनुशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, अहिंसा यात्रा के प्रणेता, शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी ने गुरुवार को कंजीकोड स्थित ए.एस.एस.आई.एस.आई. मिशनरी स्कूल से मंगल प्रस्थान किया। प्रस्थान के पूर्व आचार्यश्री ने स्कूल की शिक्षिकाओं को अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति प्रदान की। आचार्यश्री का आज का लगभग पूरा विहार राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 544 पर ही हुआ। मार्ग मंे आने वाले अनेक ग्रामीणों को मंगल आशीष और पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए आचार्यश्री अपने गंतव्य की ओर गतिमान थे। गत दिनों से हो रही तेज धूप ने मानों लोगों को मई-जून के महीने की याद दिला दी है। तापमान की बात करें तो स्थानीय तापमान फरवरी महीने में ही 35 के पार चला गया है। इसके बावजूद समताभावी आचार्यश्री महाश्रमणजी लगभग बारह किलोमीटर का विहार कर पालाक्कड जिला मुख्यालय के चन्द्रानगर में स्थित श्री पार्वती मण्डपम में पधारे।

इस वैवाहिक मण्डप में आयोजित मंगल प्रवचन में उपस्थित श्रद्धालुओं को आचार्यश्री ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि आदमी को समय और शक्ति का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए। आदमी के पास यदि शक्ति हो और समय हो तो आदमी को उसका सदुपयोग करने का प्रयास करना चाहिए। आदमी का अंतराय कर्म जितना हल्का होता है, आदमी उतना ही शक्तिशाली बनता है। दुनिया में शक्ति का बहुत महत्त्व है। आदमी के भीतर अनंत शक्तियां सन्निहित हैं। आदमी को अपनी शक्तियों का सदुपयोग करने का प्रयास करना चाहिए।

जो आदमी अपनी शक्ति का दुरुपयोग करता है, दूसरों को कष्ट, पीड़ा पहुंचाने, किसी का बुरा करने का प्रयास करता है, वह दुर्गति की ओर कदम बढ़ा लेता है। यदि दुर्जन के पास शक्ति तो वह किसी को कष्ट देने में, किसी का बुरा करने प्रयोग होती है और यदि वह शक्ति सज्जन अथवा संतों के पास होती है तो वह दूसरों के कल्याण, परोपकार तथा जन कल्याण में उपयोगी होती है। इसलिए आदमी को अपनी शक्ति का सदुपयोग करने का प्रयास करना चाहिए।

हाथी एक विशालकाय जानवर होता है, लेकिन एक छोटा अंकुश उसे वश में कर लेता है। इसी प्रकार कितना ही भयंकर, घनघोर अंधेरा हो एक छोटा दीपक अंधेरे को दूर देता है। विशाल पहाड़ को एक छोटा व्रज चूर-चूर कर देता है। इनमें अपना तेज और अपनी शक्ति होती है। आदमी को अपनी शक्ति और बलवत्ता का कल्याणकारी कार्यों में प्रयोग करने का प्रयास करना चाहिए। कोई किसी को प्रेरणा देकर भी दूसरों की शक्ति और बलवत्ता को जागृत भी कर सकता है। प्रतिभा हो और उसे अच्छी दिशा मिल जाए तो वह कल्याणकारी हो सकती है। जनबल, धनबल, मनोबल, वचनबल होता है, लेकिन इस सबसे बड़ा बल मनोबल का होता है। आदमी को आत्म साधना के द्वारा स्वयं की शक्ति को जागृत करने का प्रयास करना चाहिए। आचार्यश्री ने उपस्थित श्रद्धालुओं को अहिंसा यात्रा के संकल्प स्वीकार कराए। मंगल प्रवचन के पश्चात् विविध भारती संस्था के डाॅ. सतवत सिंह ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। श्री हितेष जैन ने गीत का संगान किया।